बी.एस. एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
माकणी. जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

साहित्य के हेतु

प्रस्तुति : प्रा. आर. एम. खराडे
हिंदी विभाग,
बी.एस. एस. कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, माकणी
जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

काव्य के हेतु

’हेतु’ का शाब्दिक अर्थ है कारण, अतः ’काव्य हेतु’ का अर्थ हुआ काव्य की उत्पत्ति का कारण। किसी व्यक्ति में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देने वाले कारण काव्य हेतु कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि काव्य ’कार्य’ है और ’हेतु’ कारण है।

बाबू गुलाबराय ने काव्य हेतु पर विचार करते हुए लिखा है-’’हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है, जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।’

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य हेतुओं पर पर्याप्त विचार किया गया है और तीन काव्य हेतु माने गए हैं-

१. प्रतिभा

२.व्युत्पत्ति (ज्ञान उपलब्धि के शास्त्रों का अध्ययन व लोक व्यवहार)

३. अभ्यास ।

'प्रतिभा सर्वप्रमुख काव्य हेतु है जिसे काव्यत्व का बीज माना गया है। 'प्रतिभा' के अभाव में कोई व्यक्ति काव्य रचना नहीं कर सकता।
काव्य हेतुओं पर सर्वप्रथम 'अग्निपुराण' में विचार किया गया और प्रतिभा, वेदज्ञान तथा लोकव्यवहार को काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया गया।
नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।। –अग्निपुराण
अर्थात् ''लोक में नरत्व दुर्लभ है और उसमें विद्यावान नर होना दुर्लभ है। कवित्व परम दुर्लभ है और कविता करने की शक्ति (प्रतिभा) तो और भी दुर्लभ है।''
लगभग सभी भारतीय आचार्य ने प्रतिभा को अनिवार्य काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया है।

प्रतिभा वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति को काव्य रचना में समर्थ बनाती हैं। राजशेखर ने प्रतिभा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है-सा शक्तिः केवल काव्य हेतुः।

आचार्य भट्टतौत्त के अनुसार प्रतिभा उस प्रज्ञा का नाम है जो नित नवीन रसानुकूल विचार उत्पन्न करती है:

'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मताः'

आचार्य वामन का मत है कि प्रतिभा जन्म से प्राप्त संस्कार है जिसके बिना काव्य रचना सम्भव नहीं है। अर्थात् अभिनव गुप्त ने प्रतिभा की परिभाषा करते हुए लिखा है-'प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माण क्षमा प्रज्ञा'

और काव्य का बीज स्वीकार करते है जिसके बिना काव्य की रचना असम्भव है।
'शक्तिः कवित्व बीज रूपः संस्कार विशेषः'
विभिन्न आचार्यों ने प्रतिभा के भेद इस प्रकार से किये हैं –
रुद्रट –
(1) सहजा (2) उत्पाद्या। -सहजा पूर्व-जन्म के संस्कारों से प्राप्त प्रतिभा है तथा उत्पाद्या से तात्पर्य इस जन्म में अर्जित प्रतिभा से है।
राजशेखर –
(1) कारयित्री (2) भावयित्री -कारयित्री का संबंध कवि से तथा भावयित्री का संबंध सहृदय (पाठक) से है।
हेमचंद्र –
(1) सहजा (2) औषधिकी। यह रुद्रट द्वारा किये गए भेद का ही रूप है। सहजा जन्म से संबंधित है तो औषधिकी का संबंध श्रम आदि से है।

आचार्यों ने प्रतिभा का जो स्वरूप स्पष्ट किया है उससे हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं:
प्रतिभा काव्य का मूल हेतु है।
यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति है।
प्रतिभा नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा है।
.प्रतिभा के बल पर ही कवि अपूर्व शब्दों, अपूर्व भावों, अलंकारों, उक्ति वैचित्र्य आदि का विधान करता है।

२) व्युत्पत्ति
व्युत्पत्ति का शाब्दिक अर्थ है निपुणता, पांडित्य या विद्वत्ता। ज्ञान की उपलब्धि को भी व्युत्पत्ति कहा गया है। यह ज्ञानोपलब्धि शास्त्रों के अध्ययन और लोक व्यवहार के अवेक्षण से होती है। विद्वानों का मत है कि साहित्य के गहन चिन्तन-मनन से कवि की उक्ति में सौन्दर्य का समावेश हो जाता है और उसकी रचना सुव्यवस्थित हो जाती है।
राजशेखर के अनुसार- उचितानुचित विवेकौ व्युत्पत्तिः। अर्थात् उचित-अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है।
रुद्रट ने यह बताया है कि छन्द, व्याकरण, कला, पद और पदार्थ के उचित-अनुचित का सम्यक् ज्ञान ही व्युत्पत्ति कहा जाता है।
आचार्य मम्मट ने व्युत्पत्ति को एक नया नाम दिया है-निपुणता। यह निपुणता चराचर जगत के निरीक्षण और काव्य आदि के अध्ययन से प्राप्त होती है। संस्कृत आचार्यों ने व्युत्पत्ति को काव्य हेतुओं में दूसरा स्थान दिया है।

व्युत्पत्ति के बल पर ही कोई व्यक्ति यह निर्णय कर पाता है कि किस स्थान पर किस शब्द का प्रयोग उचित होगा। सच तो यह है कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति समवेत रूप में ही काव्य रचना के हेतु हैं। जैसे लावण्य के बिना रूप फीका लगता है वैसे ही रूप के बिना लावण्य भी आकर्षक नहीं लगता। लोक और शास्त्र का अध्ययन कवि को त्रुटियों से बचाता है।वर्ण्य विषय का ज्ञान, ऋतु ज्ञान, देश ज्ञान, भौगोलिक जानकारी आदि से कविता में त्रुटि आने की सम्भावना नहीं रहती।

३)अभ्यास
काव्य निर्माण का तीसरा हेतु अभ्यास है। भामह ने लिखा है कि शब्दार्थ के स्वरूप का ज्ञान करके सतत अभ्यास द्वारा उसकी उपासना करनी चाहिए, साथ ही अन्य कवियों के कृतित्व का अध्ययन भी करना चाहिए। जिससे अभ्यास नित्यप्रति दृढ़ होता जाए। आचार्य वामन ने भी अभ्यास को महत्त्व देते हुए लिखा है-'अभ्यासोहि कर्मसु कौशलं भावहिति।'
अर्थात् अभ्यास के द्वारा ही कवि कर्म में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।
आचार्य दण्डी ने तो अभ्यास को ही काव्य का प्रमुख हेतु माना है। वे तो यहां तक कहते हैं कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति के अभाव में केवल अभ्यास से ही काव्य रचना में कोई कुशल हो सकता है। सरस्वती की साधना से और शास्त्रों के श्रवण से कोई भी व्यक्ति सफल कवि बन सकता है। दण्डी की यह धारणा अन्य आचार्यों ने स्वीकार नहीं की।

प्रतिभा के अभाव में काव्य रचना सम्भव ही नहीं है। फिर कोरा अभ्यास व्यक्ति को कैसे कवि बना सकता है, किन्तु अभ्यास के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। प्रारम्भ में प्रतिभा सम्पन्न कवि भी अच्छी कविता नहीं लिख पाते। निरन्तर अभ्यास से ही उनकी कविता निखरती है।

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात तें सिंल पर परत निसान।जो कवि कीर्ति चाहते हैं उन्हें आलस्य को त्यागकर सरस्वती की उपासना करनी चाहिए और निरन्तर कवि कर्म का अभ्यास करते रहना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रतिभा व्युत्पत्ति और अभ्यास ही प्रमुख काव्य हेतु हैं, किन्तु प्रतिभा सर्वप्रमुख है जिसे व्युत्पत्ति और अभ्यास से निरन्तर निखारा जा सकता है। वस्तुतः ये तीनों समन्वित रूप में ही काव्य के हेतु हैं जिन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता।
जिस प्रकार पानी को बार-बार छानने से वह निर्दोष हो जाता है और बर्तन को बार-बार मांजने से वह चमक उठता है उसी प्रकार व्युत्पत्ति और अभ्यास से प्रतिभा को निर्दोष और आकर्षक बनाया जा सकता है।
राजशेखर ने इसे स्पष्टतः पारिभाषित किया है कि निरंतर प्रयास करते रहना ही अभ्यास है।

धन्यवाद!